Research Paper Sanskrit

उन्नीसवीं से बीसवीं शताब्दी तक के प्रमुख आधुनिक संस्कृत उपन्यास (Unniswin Se Biswin Shatabdi Tak Ke Pramukh Aadhunik Sanskrit Upnyaas)

Dr. Devesh Kumar Mishra

Assistant Professor, Deptt. of Sanskit, Uttarakhand Open University, TeenPani Bypass road , Haldwani, Nainital

ABSTRACT

संस्कृत वाङमय की पवित्र धारा वैदिक काल से प्रवाहित है। काव्य के दृष्य एवं श्रव्य भेदों में दृष्य के अन्तर्गत सम्पूर्ण नाट्य साहित्य आता है। श्रव्य के अन्तर्गत पद्य, गद्य एवं चम्पू की गणना होती है। गद्य काव्य के कथा आख्यायिका दो भेद प्राचीन काल से ही स्वीकृत हैं। कादम्बरी कथा का उदाहरण है और हर्शचरित आख्यायिका का। कादम्बरी महाकवि बाणभट्ट की कालजयी रचना है जो पूर्व के गद्य लेखन की षैली को अपने में समाहित तो की ही है साथ ही उत्तरवर्ती लेखन को प्रभावित करने की क्षमता से भरी हुई है। आज गद्य के कथा सम्पादकीय, टिप्पणी बहुत सारे भेद दिखाई पड़ते हैं। गद्यकाव्यमीमांसा में बहुत सारे गद्य भेदों का दिग्दर्षन मिलता है। गद्य के विभिन्न विधाओं में सर्वथा नूतन विधा उपन्यास की अवतारणा पं0 अम्बिकादत्तव्यास के द्वारा षिवराजविजयम् के रूप में की गयी है। इस उपन्यास को एक बंगला उपन्यास का कुछ अंषों में अनुवाद भी प्रमाणित किया जाता है। अम्बिकादत्तव्यास के द्वारा प्रारम्भ किया गया उपन्यास लेखन संस्कृत में बहुत लोकप्रिय हुआ और आज बहुत से उपन्यास लिखे जा चुके हैं। संस्कृत साहित्य में उपन्यास विधा का आविर्भाव बंगला उपन्यास के अनुवाद द्वारा हुआ। उपन्यास विधा साहित्य की सर्वाधिक ललित विधा है। सम्प्रति विष्व की विभिन्न भाशाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय और सर्वाधिक प्रचारित विधा है।

KEYWORDS lEifr]yfyr] mÜkjorh] dky t ;h] 0;Riu]x|c)]vfHk/kku vkfoHkkoA

प्रस्तावना

विभिन्न भाषाओं में क्रमशः लोकप्रिय होती हुई उपन्यास की विधा को अलग–अलग नामों से अभिहित किया गया। अंग्रेजी में तो इस विधा को 'नावेल' कहा जाता है। हिन्दी व बंगाली में 'उपन्यास' नाम दिया गया। फ्रांसीसी में इसे 'रोमॉ' नाम से जानते हैं। गुजराती एवं तमिल भाषा में नावेल के समकक्ष 'नवल कथा' अभिधान से सम्बोधित किया गया। मराठी भाषा में इसे 'कादम्बरी' नाम से अभिहित किया जाने लगा। कादम्बरी नाम से अभिहित किये जाने का कारण यह दिखलाना था कि उपन्यास विधा भारत की अपनी विधा है आयातित नहीं, और इसका मूल कादम्बरी में ढूंढा गया। उपन्यास को आख्यायिका एवं कथा का समन्वित रूप मानने के पक्ष में डा0 ओमप्रकाश शास्त्री, डा0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र एवं कलानाथ शास्त्री जैसे बहुत से विद्वान हैं। भारतीय संस्कृति साहित्य में यह शब्द उपन्यास विधा के परिचायक अर्थ में 19वीं शदी के अन्त में प्रयुक्त हुआ। उपन्यास शब्द का प्रयोग तमाम संस्कृत ग्रन्थों में देखने को मिलता है। जैसे – अथर्ववेदीय माण्डूक्यशिक्षा (84), रामायण के युद्ध काण्ड (40–26) और अयोध्याकाण्ड (9–44), महाभारत राजधर्मानुशासन पर्व (17–18, 28), अग्निपुराण उत्तर भाग (360–61), ब्रह्मसूत्र (4–4–5 व 7), मनुस्मृति (9–31), प्रतीज्ञायौगन्धरायण– प्रथम अंक, पंचरात्रम् – प्रथम अंक, मालविकाग्निमित्रम्– चतुर्थ अंक, अभिज्ञानशाकुन्तलम्– तृतीय अंक व पंचम अंक, अमरुशतक– छान्दोग्य उपनिषद (8–7–1), तैत्तिरीय उपनिषद– (9 व 11 अनुवाक), ब्रह्मसूत्र के श्रीभाष्य (4–4–5), व्याकरण महाभाष्य में द्वितीयाह्निक, नाट्यशास्त्र (19–81), काव्यालंकार (1–22, 2–71) दशरूपक (1–31), साहित्य दर्पण (6–87, 88, 93); व 10–35 में मिलता है। कुछ प्रसंग उल्लेख्य हैं– शकुन्तला– (आत्मगतम्) पावकः खलु वचनोपन्यासः। इसमें उपन्यास का अर्थ प्रारम्भ है।

उपन्यास का अर्थ

इस शब्द का अर्थ कोशों में जो दिया गया है उसके अनुसार इस शब्द के समीप में रखना, समीप में जाना, उपनिधि, संकेत, उल्लेख, वाक्योपक्रम, प्रस्तावना, भूमिका आदि अर्थ हैं। उपन्यास शब्द उप + नि उभय उपसर्ग पूर्वक अस् धातु से घञ् प्रत्यय करने से व्युत्पन्न होता है। समीप में रखना, समीप स्थित, समीप गमन आदि इस शब्द के अर्थ निकलते हैं। निघण्टु में उपन्यास शब्द के अर्थ वाक्योपक्रम छल विचार आदि अर्थ बताये गये हैं।

उपन्यास का स्वरूप

संस्कृत में उपन्यास के प्रारम्भ अभिधान व्युत्पत्तिपरक अर्थ से आप परिचित हो चले हैं। अब उपन्यास के सवरूप से सम्बन्धित पाश्चात्य एवं भारतीय, संस्कृत एवं हिन्दी के विद्वानों के मतों से परिचय प्राप्त करना अभीष्ट होगा। पाश्चात्य विचारकों में वर्नाडशा, रिचर्ड स्टैंग, एर्नेस्ट, राल्फ फाक्स, ई0एम0 फास्टर के अभिमत को प्रस्तुत किया जा रहा है। वर्नाडशा का मत है– 'उपन्यास जीवन की अभिव्यक्ति मात्र नहीं हैं अपितु इसका मूल्यांकन, आलोचन और टिप्पणी हैं। रिचर्ड स्टैंग महोदय के अनुसार उपन्यास रचना कलात्मिका होती है। कला जीवन की प्रतिकृति, अभिव्यक्ति आलोचना व्याख्या टिप्पणी अथवा व्यंग्य नहीं है, अपितु जीवन सृष्टि ही कला है। जैसे चित्रकार चित्र का निर्माण करता है वैसे ही उपन्यासकार उपन्यास की रचना करता है। एर्नेस्ट महोदय का स्वाभिमत है– उपन्यास एक गद्य कथा है जो यथार्थ जीवन को चित्रित करती है। राल्फ फाक्स ने उपन्यास के सन्दर्भ में लिखा है– उपन्यास कला का प्रथम गद्य रूप है जो मानवता को समग्रता से समझने तथा अभिव्यक्त करने की चेष्टा करता है। संस्कृत विद्वानों ने भी उपन्यास के स्वरूप पर प्रकाश डाला है। प्रो0 अभिराज, राजेन्द्र मिश्र उपन्यास का लक्षण करते हैं –

अथोपन्यासलक्षणम् –

कथाऽऽख्यायिकयोः कष्चिन्भिश्रभेदोऽपि साम्प्रतम्।
उपन्यास इति ख्यातो भाशान्तरप्रतिश्ठितः।।
कालखण्डविषेशस्य समग्रं जनजीवनम्।
प्रतिबिम्ब इवादर्षे न्यस्यतेऽत्र सविस्तरम्।।
क्वचित्सामाजिकी क्रान्तिः सर्वोदयसमर्थिनी।
रूढिपाखण्डविध्वंसो नवाचारः क्वचित्पुनः।।
महाकाव्यवदेवायमुपन्यसोऽपि वस्तुतः।
साङ्गोपाङ्गं समग्रञ्च नेतृजीवनचित्रणम्।।
धर्मराजनयार्थानां नैव वृत्तं हि तादृषम्।
यदुपन्यासनिर्माणे नोपयोज्यं भवेत्पुनः।।
एवंविधाः सन्त्युपन्यासाः इतिवृत्तानुरोधतः।
कथाप्रस्तुतिभेदाच्च कविप्रतिभयाऽन्वितः।। अभिराजयषोभूशणम्

डॉ0 राधाबल्लभ त्रिपाठी ने गद्यबद्ध कथा को ही उपन्यास माना है। अभिनवकाव्यालंकारसूत्र में त्रिपाठी ने कहा है– गद्यबद्ध उपन्यासो महाकाव्यमयी कथा। महाकाव्यमयी शब्द से डा0 त्रिपाठी जी का आशय नायक के जीवन की आद्यन्त वर्णना से है। डॉ0 रहस बिहारी द्विवेदी ने नव्यकाव्यतत्वमीमांसा में उपन्यास का लक्षण दिया है–

गद्यकाव्यबृहद्बन्ध उपन्यासोऽभिधीयते।
अस्मिन् युगोचितं वस्तु पात्रं कविसमीहितम्।।
देषकालोचितं चित्रं गद्यषिल्पं मनोहरम्।
कल्पितं चापि तत्सर्वं यथार्थं सत्प्रतीयते।।

उपन्यास के भेद

उपन्यास के लक्षण से आप परिचित हो गये होंगे। अब उसके भेदों से परिचित होना आवश्यक प्रतीत होता है। उपन्यास के भेदों पर अर्वाचीन संस्कृत साहित्य दशा एवं दिशा, आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास एवं विंशशाताब्दिकं संस्कृतगद्यम् में विचार किया गया है। डॉ0 प्रमोद भारतीय उपन्यास के पाँच भेद माने हैं। 1 .Traditional Novels, 2. Social Novels, 3. Historical Novels, 4. Revolutionary Novels, 5. Novels Based on Legends and Myths. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास में भी पाँच ही तरह के भेद स्वीकार किये गये हैं– 1. अनुवाद किये गये उपन्यास, 2. सामाजिक उपन्यास, 3. नवयुगीन कथ्य पर आधारित उपन्यास, 4. आत्मकथा शैली का उपन्यास, 5. अलंकृत शैली का उपन्यास। डॉ0 ओमप्रकाश शास्त्री ने छः भेद स्वीकार किये हैं– 1. ऐतिहासिक, 2. सामाजिक, 3. पौराणिक, 4. श्रृंगारात्मक, 5. आध्यात्मिक, 6. प्रकीर्णक। मेरी सम्मति में उपन्यास के निम्न भेद स्वीकृत होने चाहिए– 1. ऐतिहासिक उपन्यास, 2. सामाजिक, 3. पौराणिक, 4. प्रणयकथामूलक, 5. आत्मकथापरक 6. आध्यात्मिक, 7. क्रान्तिकारी, 8. अनूदित।

ऐतिहासिक उपन्यास

जब उपन्यासकार ऐतिहासिक घटनाओं को लेकर अथवा ऐतिहासिक चरित्र का आधार लेकर इतिहास और काव्य के तत्वों का समन्वयात्मक चित्रण करता है, तो उसे ऐतिहासिक उपन्यास कहा जाता है। यहाँ एक बात विशेष ध्यातव्य है कि संस्कृत में सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गये। ऐतिहासिक उपन्यासों में

शिवराजविजय एक प्रमुख उपन्यास है और यही संस्कृत साहित्य का प्रथम उपन्यास है। इसकी कथावस्तु महाराष्ट्र केशरी वीर शिवाजी के जीवनवृत्त पर आधारित है। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक उपन्यासकारों में श्रीनाथ हसूरकर, विश्वनारायण शास्त्री, मोहनलाल शर्मा पाण्डेय का नाम विशेष उल्लेखनीय है। डॉ0 हसूरकर का सिन्धुकन्या (1982) उपन्यास में सिन्धु नरेश राजा दाहिर की दो पुत्रियों के बलिदान की कथा चित्रित है। विश्वनारायण शास्त्री का अविनाशी (1986) उपन्यास कामरूप की माधवी नामकी महाकाल मन्दिर के देवदासी की प्रणय कथा पर आश्रित है। मोहनलाल शर्मा पाण्डेय का उपन्यास पद्मिनी (1999) चित्तौड़ के महाराज रावलरत्न सिंह की रानी पद्मिनी के चरित्र पर आधारित है। हसूरकर का प्रतिज्ञापूर्ति उपन्यास आचार्य चाणक्य के द्वारा की गयी दो प्रतिज्ञाओं के पूरा करने पर आधारित है। डॉ0 प्रेमशंकर मिश्र का श्री सुभाषचरितम् उपन्यास महान क्रान्तिकारी आजाद हिन्द फौज के संस्थापक श्री सुबाषचन्द्र बोस के जीवन वृत्त पर आधारित है। मेधाव्रताचार्य का शुद्धगंगावतार उपन्यास अपूर्ण रूप में प्राप्त होता है जो वीर शिवाजी के जीवन से सम्बन्धित इति वृत्त पर आधारित है। हसूरकर के दावानल उपन्यास का आधार महमूद गजनवी के द्व ारा सोमनाथ मन्दिर पर किया गया आक्रमण है। वासुदेव औदुम्बर के प्रेमजालम् में यवन राज आदिलशाह और महामंत्री रामदेव राय से सम्बन्धित कथावृत्त है।

पौराणिक उपन्यास

पुराणों के साथ–साथ रामायण व महाभारत की घटनाओं व चरित्रों के आधार पर लिखा गया उपन्यास पौराणिक उपन्यासों की कोटि में आता है। संस्कृत साहित्य में पुराण, रामायण व महाभारत का व्यापक महत्व है। संस्कृत साहित्य में प्राचीन पौराणि ाक कथाओं का आश्रय लेकर सामाजिक और राजनैतिक दृष्टिकोण से नूतन शैली में बहुत से उपन्यास लिखे गये। इसके उदाहरण हैं– लक्ष्मण सूरि का रामायण संग्रह (1904), भीष्मविजय (1904), महाभारत संग्राम (1905) क्रमशः रामायण व महाभारत के पात्रों व घटनाओं पर आधारित हैं। शंकरलाल माहेश्वर का अनसूयाम्युदय सती अनुसूइया के चरित्र पर आधारित है। रामस्वरूप शास्त्री का त्रिपुरदाहकथा त्रिपुरासुर के विनाश की कथा पर आधारित है। डॉ0 रामजी उपाध्याय का द्वासुपर्णा और हरिश्चन्दोदय क्रमशः श्रीकृष्ण सुदामा की मैत्री कथा व हरिश्चन्द्र के जीवन–वृत्त से सम्बन्धित हैं। इस दृष्टि से हरिनारायण दीक्षित का गोपालबन्धु, के0एम0 कृष्ण ामूर्तिशास्त्री का वैदेहीविवाह आदि भी उल्लेख्य हैं।

सामाजिक उपन्यास

सामाजिक रीति–रिवाजों, परम्पराओं, विषमताओं, घटनाओं आदि को लेकर रचे गये उपन्यास, सामाजिक उपन्यास की कोटि में आते हैं। इनमें सामाजिक विषमताओं पर प्रहार, नारी जीवन की पीड़ा, पतिव्रता नारी का चित्रण, आर्थिक विपन्नता का चित्रण भी किया गया होता है। सामाजिक उपन्यासों की श्रृंखला में बलभद्र शर्मा का वियोगिनीबाला प्रथम उपन्यास माना जाता है। इस दृष्टि से अन्य उल्लेखनीय उपन्यास हैं– नरसिंहाचार्य का सौदामिनी, राजम्मा का चन्द्रमौलि, बालकुन्नन नम्बूदरी पाद का सुभद्रा उपन्यास, नगेन्द्र सेन का कल्याणी, परमेश्वर झा का कुसुमकलिका, कृष्णमाचार्य का पातिव्रतम् पाणिग्रहण, सुशीला और मनुजेन्द्र दत्त का सती छाया आदि। इसके अतिरिक्त आनन्दवर्द्धन रामचन्द्र रत्नपारखी का कुसुम लक्ष्मी (1961) एक प्रसिद्ध सामाजिक उपन्यास है जिसमें एक मराठी युवक की तीन बालाओं से गुजरने की कथा चित्रित है। यह कथा बैंगलौर महानगर से सम्बन्धित है। सत्यप्रकाश सिंह का गुहावासी (1992) रामकरण शर्मा का रयीसः (1994), केशवचन्द्र दास का शशिरेखा, श्रीरामदवे का मुंशी प्रेमचन्द के निर्मला उपन्यास का अनुवाद निर्मला (2004) भी सामाजिक उपन्यास हैं। गणेशराम शर्मा का मूढचिकित्सा जीवतोऽपि प्रेतभोजनम्, पं0 नारायण शास्त्री खिस्ते का दारिद्राणाम् हृदयम् तथा दिव्यदृष्टि भी इसी कोटि के उपन्यास हैं।

प्रणयकथामूलक उपन्यास

नायक और नायिका के प्रणय सम्बन्ध को आधार बनाकर रचे गये उपन्यास जो कि श्रृंगार रस को प्रकट करने के बहाने कमनीय कौतुहल भी उत्पन्न करते हैं प्रणय कथामूलक उपन्यास माने जाते हैं। संस्कृत साहित्य में सभी सहृदयजन रस की प्रध ाानता स्वीकार करते हैं। रसों में रसराज श्रृंगार है, प्रणयकथामूलक उपन्यास श्रृंगार रस से पाठक को आह्लादित करते हैं। इस तरह के उपन्यासों में शैलताताचार्य की कुमुदिनीचन्द्र, कृष्णमाचार्य की मन्दारवती, विदुशेखरभट्टाचार्य की चन्द्रप्रभा, जग्गूबकुल भूषण की जयन्तिका, मुडुम्बै श्रीनिवासाचार्य की मणिमेखला, दुर्गादत्त शास्त्री की वियोगवल्लरी, जगदीशचन्द्र आचार्य की मकरन्दिका उल्लेखनीय हैं।

आत्मकथामूलक उपन्यास

वे उपन्यास जिसमें उपन्यासकार स्वयं अपने जीवन से सम्बन्धित घटनाओं, अनुभूत झंझावातों का चित्रण करता है उन्हें आत्मकथामूलक उपन्यास कहा जाता है। इस कोटि में गणेशराम शर्मा का मामकीनो जीवनसंघर्षः एक आत्मकथा मूलक उपन्यास है। इस तरह के उपन्यासों में देवर्षि कलानाथ शास्त्री के उपन्यास जीवनस्य पाथेयः जिसे संस्कृत उपासिकायाः आत्मकथा नाम से भी जाना जाता है जो कथानकवल्ली में 1987 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास संस्कृत का अध्ययन करने वाली कल्पना नामक बाला की राकेश के साथ विवाह आदि की घटना पर आधारित है। डॉ0 विवेकनाथ तिवारी ने नारायण दास द्वारा रचित वह्निवलयः को आत्मकथात्मक शैली का उपन्यास माना है।

आध्यात्मिक उपन्यास

आध्यात्मिक उपन्यास संस्कृत साहित्य में अत्यन्त विरले ही हैं। श्री निवासाचार्य की कैरविणी उपन्यास को ओमप्रकाश शास्त्री ने इसी कोटि का उपन्यास माना है। इस उपन्यास में मद्रास की देवी त्रिपोली की उपासना के वर्णन के द्वारा आध्यात्मिक विषय की प्रवणता से पाठक के हृदय को मुग्ध कर देने की क्षमता रखता है। उ0प्र0 के देवरिया जनपद के प्रसिद्ध उपन्यासकार पं0 वेदव्यास शुक्ल का सौप्रभम् उपन्यास भी आध्यात्मिक है।

क्रान्तिकारी उपन्यास

उपन्यास के इस भेद का उल्लेख डॉ0 प्रमोद भारतीय ने किया है जिसमें डॉ0 राध ाावल्लभ त्रिपाठी के विक्रमचरितम् (2000) उपन्यास को उदाहरण के रूप में दिया गया है। डॉ0 त्रिपाठी ने इस उपन्यास में यह दिखाया है कि सत्य की हमेशा विजय होती है। इसका नायक विक्रम शेर है जो सूकर के षड्यन्त्र के द्वारा पराजित सा हो जाता है किन्तु अन्त में शेर सूकर पर विजयी होता है। डा0 त्रिपाठी का यह उपन्यास अंग्रेजी लेखक जार्ज आर्वेल के एनिमल फार्म से प्रभावित प्रतीत होता है।

अनूदित उपन्यास

अन्य भाषाओं के ग्रन्थों का संस्कृत में अनुवाद किये गये उपन्यास ही अनूदित उपन्यास हैं। संस्कृत में उपन्यास विधा का लेखन कुछ हद तक अनूदित उपन्यासों के लेखन से ही माना जाता है। संस्कृत के आचार्यों ने बंग भाषा, तमिल भाषा, आंग्ल भाषा व हिन्दी भाषा के उपन्यासों का संस्कृत में अनुवाद किया है। बंग भाषा के जिन रचनाओं का अनुवाद किया गया उनका परिचय अपेक्षित है। भट्टाचार्य ने रविन्द्रनाथ ठाकुर के उपन्यास का जयपराजयम् शीर्षक से अनुवाद किया। श्रीशैलताताचार्य ने बंकिमचन्द्रचटर्जी के क्षत्रियरमणी एवं दुर्गेशनन्दिनी का अनुवाद उन्हीं नामों से किया। हरिचरण भट्टाचार्य ने बंकिमचन्द्र के कपालकुन्डला का अनुवाद उसी नाम से किया है। भट्ट मथुरानाथ शास्त्री बंग भाषा के उपन्यास पणरक्षा से प्रभावित होकर आदर्शरमणी लिखे। तमिल उपन्यासों का भी संस्कृत में अनुवाद हुआ। डी0टी0 कुमार ताताचार्य ने दौरेस्वामी अय्यंगर के मेनका उपन्यास का अनुवाद किया। श्रीनिवासाचार्य ने तमिल साहित्य के आधार पर दो प्रेमकथा मूलक प्रवालवल्ली तथा मणिमेखला की रचना की। ए0 राजगोपाल चक्रवर्ती ने शैवालिनी और कुमुदिनी, विलासकुमारी संगरः नामक उपन्यास तमिल साहित्य के अनुवाद हैं।

निष्कर्ष – आंग्ल भाषा के ग्रन्थों का भी संस्कृत में उपन्यास विधा में अनुवाद हुआ। आर0राजवर्मा कोइतम्बुरान ने शेक्सपीयर के आथेलो नाटक का उद्दालचरितम् नामसे अनुवाद किया। इसमें आंग्ल भाषा के बहुत से शब्दों का संस्कृतकरण किया गया है। पी0के0 कल्याण राम शास्त्री ने शेक्सपीयर के लुक्रिस का अनुवाद कनकलता नाम से किया है। कादम्बरी तिरूमलाचार्य ने शेक्सपीयर के कामेडी आफ एरर्स नाटक का भ्रान्तिविलासः शीर्षक से अनुवाद किया है। रंगाचार्य ने गोल्ड स्मिथ के विकार आफ वेकफिल्ड का अनुवाद प्रेमराज्यम् अभिधान से किया है।हिन्दी भाषा के बहुत से उपन्यासों का अनुवाद संस्कृत में किया गया है। जयपुर के कथाकार गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री जी चोखेरबाली का अनुवाद उद्वेजिनी नामक शीर्षक से किया है तथा चतुरसेन शास्त्री के वैशाली की नगरवधू का अनुवाद आम्रपाली नामसे किये हैं। प्रेमचन्द्र के निर्मला उपन्यास का अनुवाद श्रीरामदवे ने 2004 में किया है। अनूदित उपन्यासों का एक अलग वर्ग माना जाय इससे ओमप्रकाश शास्त्री सहमत नहीं हैं। उनका अभिमत है कि अनूदित उपन्यासों को प्रकीर्णक वर्ग में ही माना जाय। चूँकि सर्वप्रथम संस्कृत में अनूदित उपन्यासों से ही औपन्यासिक लेखन की शुरूआत हुई। अतएवं इनका एक अलग वर्ग माना जाना चाहिए।

REFERENCES

1. अभिराजयषोभूशणम् – अभिराज राजेन्द्र द्य 2. अभिनवकाव्यालंकारसूत्र डॉ0 राधाबल्लभ त्रिपाठी द्य 3. नव्यकाव्यतत्वमीमांसा डॉ0 रहस बिहारी द्विवेदी |